VAISH COLLEGE, BHIWANI
(Affiliated to Ch.Bansilal University, Bhiwani)

Ref. No. S.pref.5.

Date 8.7.2019

Institutional Distinctiveness

Vaish College Bhiwani established in 1944 under the Vaish Mahavidyalaya Trust, Bhiwani, is a profound educational Institution offering quality education for undergraduate as well as Post graduate students belonging to urban, semi-urban and rural background of Bhiwani region for last 78 years. The institute was started with 125 students which increased to 2864 in current session. The foundation stone of the Institute was laid during British regime with a clear vision to uplift the educational status of people of District Hisar (That time Bhiwani was part of Hisar). The Institute has a vision to develop good citizen among the people of district Bhiwani through imparting quality education. The Institute is continuously growing on the path of success as it reflects some uniqueness in its working and culture.

- Our Institute focuses on holistic development of students and was the first and foremost Institute of district Hisar affiliated by Punjab University, which ignited the spark of education among its residents.
- Games are given special attention as Bhiwani is renowned as" Mini Cuba". Many world class players just like Sh. Vijender singh, Bronze medalist in Olympics 2008 are given by this premier Institute.
- The Institute is developing sense of social responsibility and services through its National Service Scheme and National Cadet Corps which were started in 1982 and 1952 respectively.
- NCC and NSS simultaneously develop the leadership quality among the students of Bhiwani which is considered as a backward and rural region.

Rajender

PRINCIPAL,
Vaish College,
BHIWANI

Railway Road, Bhiwani - 127021 (Haryana) | Tel. : 01664-242338
Email : vcbprincipal@gmail.com | Web : www.vaishcollegebhiwani.ac.in

23, 10:24 AM IMG_20230901_100134.jpg

वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट, भिवानी

के

हीरक जयन्ती समारोह के शुभावसर पर

स्मारिका

(1989-90)

VAISH COLLEGE LIBRARY
B-483
BHIWANI

सम्पादक :
पुरुषोत्तमदास तुहीरामका

सह-सम्पादक :
राधाकृष्ण अग्रवाल
एम.ए. (हिन्दी, राज विज्ञान)

प्रकाशक :
गौरीशंकर बजाज
मंत्री
वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट भिवानी-125021
(हरियाणा)

Principal,
VAISH COLLEGE
BHIWANI

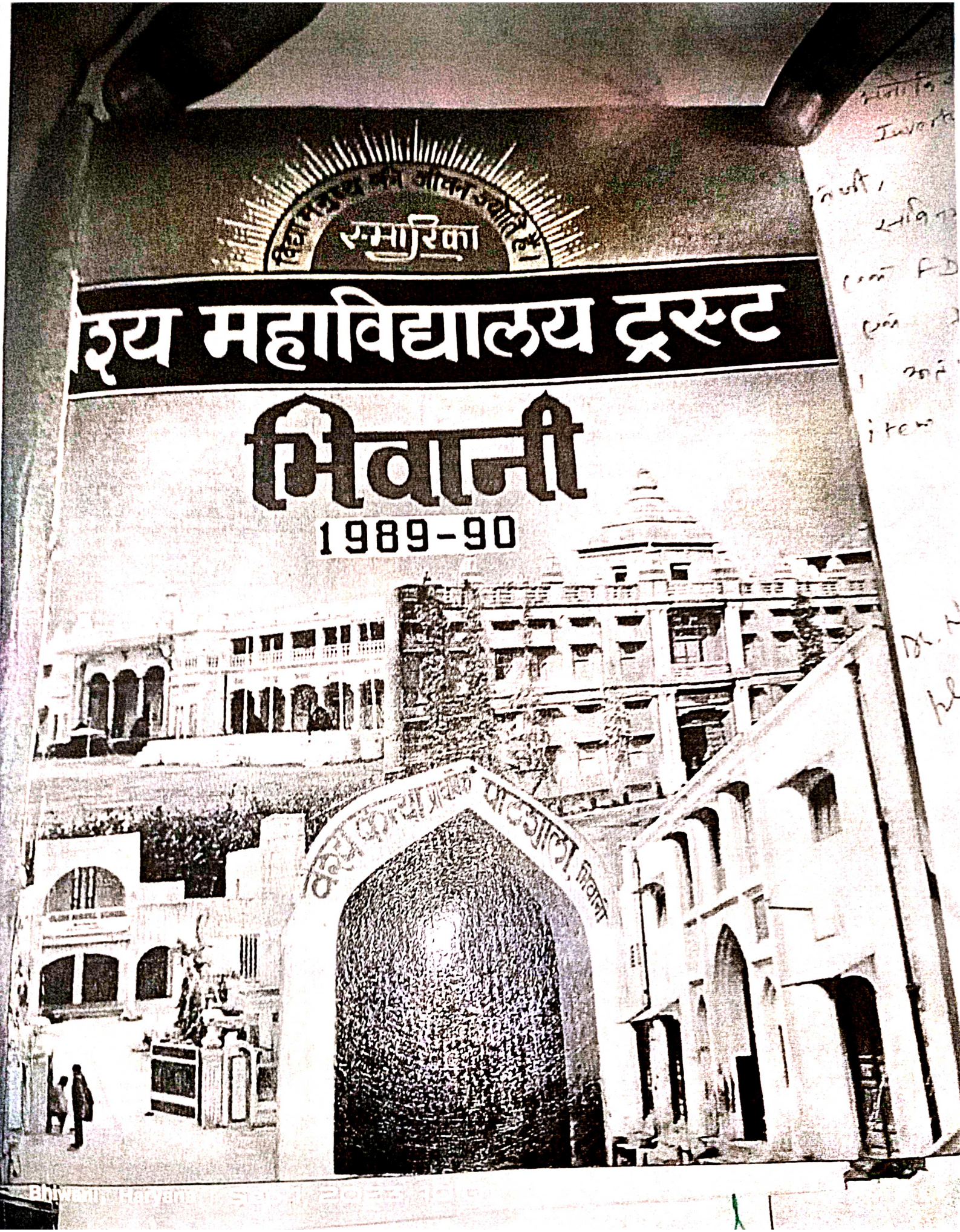
स्मारिका
श्य महाविद्यालय ट्रस्ट
भिवानी
1989-90

वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट, भिवानी

एक सिंहावलोकन

राधाकृष्ण अग्रवाल (एम.ए.)

भिवानी नगर ने समाज सुधार के क्षेत्र में स्व. मेलाराम जी मोडा, ला. रामचन्द्रजी वैद, बाबू ...लाल जी चिड़ीपाल, बाबू शिवराम दास जी ..., ला. मुरलीधर जी बैद तथा श्री राधाकृष्ण जी ... जैसी महान विभूतियां राष्ट्र को प्रदान कीं। इन सुधारकों की मान्यता थी कि जब देश के भिन्न-भिन्न समाज, सामाजिक धरातल पर संगठित होकर अपनी-अपनी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करेंगे और अन्ध विश्वास व अज्ञान को समाप्त करने के लिए शिक्षा प्रसार की दृष्टि से सक्रिय होंगे तो भिन्न-भिन्न समाजों द्वारा निजी क्षेत्रों में निर्मित स्वस्थ वातावरण व जागृति से शनैः-शनैः समस्त राष्ट्र का सर्वांगीण उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जाएगा।

इन्हीं उदात्त भावनाओं से प्रेरित होकर इन महानुभावों ने समाज की स्थिति के सुधार हेतु भारत के विभिन्न नगरों में जाकर, वहाँ के निवासियों के सहयोग से वैश्य समाज में प्रचलित गंदे गीतों, पर्दा-प्रथा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि की जो कुप्रथाएँ थी, उनको समाप्त करने के लिए प्रयास किये । विधवा विवाह के क्षेत्र में तो इन दिवंगत आत्माओं ने श्लाघनीय कार्य किए । ला. मेलाराम जी मोडा व ला. रामचन्द्र जी वैद ने तो, न केवल सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक क्षेत्रों में ही कार्य किया अपितु कांग्रेस कार्यकर्त्ता के रूप में राष्ट्रपिता गाँधीजी के आह्वान पर राष्ट्र के स्वातन्त्र्य संग्राम में सक्रिय योगदान देकर जेल यात्रा भी की ।

अतः ये महापुरूष जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर समाज के कायाकल्प हेतु अपना तन-मन-धन अर्पित किया, उनके लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह अपने नगर में भी इस दिशा में जागरूकता उत्पन्न करें । भिवानी का यह ऐतिहासिक एवं प्राचीन नगर प्रारम्भ से ही धर्म प्रधान रहा है । यहाँ के भव्य मन्दिरों की विपुल संख्या के कारण ही समस्त उत्तरी भारत में इसे 'छोटी काशी' के नाम से जाना जाता है । परोपकार एवं दानशीलता की वृत्ति यहाँ की प्रमुख विशेषता रही है । परन्तु धार्मिकता, परोपकार एवं दानवीरता में अग्रगण्य होने पर भी नगर में कुरीतियों व रुढ़िवादिता का प्राबल्य था । इसीलिए भिवानी निवासियों को अज्ञान के अंधकार से निकालने व समाज में गतिशीलता लाने के प्रयोजन से, स्थानीय 'वैश्य सभा' जो सैकड़ों वर्षों से समाज सुधार के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करती आ रही थी, वैश्य कुलभूषण, ला. मेलाराम जी मोड़ा (तात्कालिक प्रधान) के सभा पतित्व में इस सभा की कार्य-समिति जिसमें नगर के अधिकाशं प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित थे, ने वैश्य-सभा, भिवानी के एक विशेष अधिवेशन में यह अनुभव किया कि सभा को अपना कार्य क्षेत्र केवल सामाजिक कार्यों तक ही सीमित न रखकर उसे शिक्षा के क्षेत्र में भी पदार्पण करना चाहिए । आश्चर्य होता है उन राष्ट्र पुरूषों की दिव्य दृष्टि को देखकर । आज तो सभी ओर स्त्री शिक्षा के प्रसार की चर्चा है; पर शिक्षा से विमुख उस युग में भी उन लोगों ने स्त्री शिक्षा के महत्व एवं उपयोगिता को समझते हुए कुछ ही मास पूर्व हुए अधिवेशन में सुविचारित शिक्षा के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए 4.9.1909 को "वैश्य कन्या प्राथमिक पाठशाला" की

तथा अन्य सब समाज व कौम और शिक्षा सम्बन्धी कामों [illegible] अपनी 14.1.43 की बैठक में तो वैश्य [illegible] ट्रस्ट की [illegible] का निर्णय ले लिया।

ला. मेलाराम जी मोढ़ा के हस्ताक्षरों से सब रजिस्ट्रार, भिवानी की अदालत में श्री वैश्य [illegible] ट्रस्ट का विधिवत पंजीकरण 29 जून, 1943 को हुआ। वैश्य समाज के अखिल भारतीय स्तर के निम्नलिखित 20 समाज सेवी, प्रतिष्ठित व्यक्ति ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी मनोनीत किए गए -

1. सेठ जुगलकिशोर जी बिरला — पिलानी
   सुपुत्र रायसाहब सेठ बलदेवदास जी बिरला
2. सेठ रामकिशन जी डालमिया — देहली
   सुपुत्र श्री हरजीमल जी डालमिया
3. सेठ लक्ष्मीनारायण जी गाडोदिया — देहली
   सुपुत्र श्री नानकराम जी
4. सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाला — भिवानी
   सुपुत्र श्री शम्भुरामजी लुहारीवाला
5. सेठ मेलाराम जी मोडा — भिवानी
   सुपुत्र श्री नरसिंहदास जी मोडा।
6. सेठ रामचन्द जी वैद — भिवानी
   सुपुत्र श्री पन्नालाल जी वैद।
7. रायसाहब सेठ राधाकृष्ण जी आलमाल — भिवानी
   सुपुत्र श्री मुखरामदास जी
8. बाबू शिवरामदास जी वकील — भिवानी
   सुपुत्र श्री ताराचंद जी
9. सेठ मुकन्दलाल जी चिड़ीपाल — भिवानी
   सुपुत्र श्री रामनारायण जी चिड़ीपाल
10. सेठ बनारसी दास जी वैद — भिवानी
    सुपुत्र श्री भगवान दास जी वैद
11. सेठ रामकुमार जी मोडा — भिवानी
    सुपुत्र श्री नान्हूरामजी मोडा
12. सेठ काँशीराम जी मुकीम — भिवानी
    सुपुत्र श्री देवीसहाय जी मुकीम
13. सेठ गणपतराय जी लुहारीवाला — भिवानी
    सुपुत्र श्री शम्भुरामजी लुहारीवाला
14. सेठ मंगतराय जी आशाराम का — भिवानी
    सुपुत्र श्री [illegible] जी
15. सेठ मुरलीधर जी गुप्त — भिवानी
    सुपुत्र श्री द्वारका दास जी गुप्त।
16. सेठ आत्माराम जी सान्द्वावालिया — [illegible]
    सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी सान्द्वावालिया
17. सेठ काँशीराम जी चौधरी — भिवा[illegible]
    सुपुत्र श्री रामविलास जी चौधरी
18. रायसाहब सेठ रतनलाल जी — [illegible]
    सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी
19. सेठ विलासराय जी — भिवानी
    सुपुत्र श्री कन्हैयालाल जी
20. सेठ ज्योति प्रसाद जी (भूतपूर्व विधायक) हिसा[र]
    सुपुत्र श्री श्योनारायण जी।

लाला मेलाराम जी मोडा ट्रस्ट के प्र[...] प्रधान व बाबू शिवरामदास जी वकील ट्रस्[ट ...] महासचिव चुने गये।

ट्रस्ट के सभी प्रमुख ट्रस्टियों ने अब तन्मयता[...] अपनी सभी शक्तियां कॉलेज के प्रारम्भ करने[...] केन्द्रित कर दीं। सर्वप्रथम तो कॉलेज के भव[...] होना नितान्त अनिवार्य था। संस्थापक ट्रस्टी दा[...] सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाला ने रेलवे स्टे[...] पास 23 बीघे भूमि जिस पर अब कॉलेज नि[...] कॉलेज निर्माण हेतु प्रदान कर दी। देहली क्लाथ[...] के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री शंकरलाल जी के कर-क[...] द्वारा कॉलेज हाल का शिलान्यास किया गया।[...] महानुभावों द्वारा प्रारम्भ में दिये गये लगभग 60[...] रु. की राशि से ला. धन्सीराम मोडा की देखरे[...] कमरों एवं सेठ उमरावसिंह जी लुहारीवाला द्वा[...] दस हजार रु. की राशि से एक हाल का नि[...] जाने पर भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति दानवी[...] जुगलकिशोर जी बिरला के कर-कमलों द्वा[...] नवम्बर 1940 को कॉलेज भवन का उद्घाट[...] गया।

...श्य कालेज के नाम से पंजाब विश्वविद्यालय ...मीडियेट स्तर तक की मान्यता प्राप्त हो जाने ...1948 से कॉलेज चालू हो गया । सौभाग्यवश ...शिक्षाविद्‌ तथा समाजसेवी डा. ...गुप्ता इस कालेज के प्रथम प्राचार्य ...किये गये तथा मेलारामजी मोडा कालेज ...समिति के प्रथम प्रधान व बाबू शिवरामदास जी ...प्रथम मंत्री बनाये गये । 1944–45 मे कॉलेज ...की संख्या जो मात्र 125 थी, बढ़कर आज ...के लगभग है । यह कॉलेज अब हरियाणा के ...राजकीय एवं अराजकीय कॉलेजों मे प्रमुख ...कॉलेजो में अपना स्थान बनाए हुए है । ...तक कॉलेज इन्टरमीडियेट स्तर तक का ...के बाद इसे स्नातक स्तर की मान्यता भी शीघ्र ...हो गई थी एवं अब तो यह कॉलेज स्नातक ...ही नहीं स्नातकोत्तर (Post Graduate) हो ...। यहाँ यह स्मरणीय है कि यह कॉलेज तत्कालीन ...जिले मे प्रथम कॉलेज होने के कारण इस कॉलेज ...हाँसी, हिसार, दादरी, महेन्द्रगढ़ तथा भिवानी एवं ...के निकटवर्ती ग्रामों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त ...विभिन्न क्षेत्रों मे उच्च पदो पर आसीन हैं ।

देशभक्ति के भावों का संचार विद्यार्थियों में हो, ...प्रयास कॉलेज के प्रबन्धकों द्वारा प्रारम्भ से ही ...गया । अतः 1947 में देश के विभाजन के कारण ...परिसर पाकिस्तान से आए हुए पुरुषार्थी बन्धुओं ...आवास के लिए दे दिया गया। सभी विद्यार्थियों एवं ...ने पुरुषार्थी बन्धुओं की जनता एवं सरकार ...सहयोग से पूरी सेवा की । इन परिस्थितियों मे उस ...कॉलेज मे अध्यापन कार्य नहीं हो सका और इस ...स्नातकों का प्रथम बैच वर्ष 1949 में ही उत्तीर्ण ...कर निकला।

संस्था के द्रुतगति से विकास ने नई-नई आवश्यकताओं को जन्म दिया । भिवानी से बाहर के स्थानों से आनेवाले विद्यार्थियों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होने लगी । अतः छात्रावास का तुरंत निर्माण करवाना आवश्यक हो गया । शिक्षा- प्रेमी सेठ गणेश दास रामगोपाल हलवासिया ने कॉलेज के साथ लगने वाली अपनी भूमि जिस पर अब कॉलेज का भव्य छात्रावास निर्मित है, उदारता पूर्वक छात्रावास के निर्माण हेतु कॉलेज को दान में दे दी और रायबहादुर विश्वेश्वर लाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट ने एक लाख रुपयो की विशाल राशि से उपर्युक्त भूमि पर शानदार छात्रावास का निर्माण करवाकर कॉलेज की इस प्रमुख समस्या एवं आवश्यकता का निदान कर दिया । छात्रावास में अस्सी छात्रों की आवासीय व्यवस्था है । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वैश्य कॉलेज के भवन-निर्माण में जहाँ पुरुषों ने अपना अमूल्य समय तथा शक्ति लगाकर दानी महानुभावों से सहायता प्राप्त करके एक सुन्दर भवन खड़ा किया वहाँ समाज सेवी एवं शिक्षा प्रेमी, परोपकारी वृत्ति की 34 साहसी महिलाओं ने भी पुरुषों के साथ-साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कॉलेज की चारदिवारी का निर्माण अपनी दानराशि से करवाकर एक नये इतिहास की सृष्टि की । छात्रावास का निर्माण होने पर कॉलेज के व्यवस्थापकों को कॉलेज के भवन का केवल छहः कमरो तक ही सीमित होना अत्यधिक खलने लगा । छात्रों एवं छात्राओं की संख्या में हुई वृद्धि के कारण तो अन्य कमरों का तुरंत निर्माण अब आवश्यक हो गया ।

श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के ट्रस्टियो ने शीघ्र ही कलकत्ता, बम्बई अहमदाबाद, दिल्ली तथा अन्य प्रमुख व्यवसायिक नगरों में रहने वाले भिवानी तथा निकटवर्ती प्रदेशों के शिक्षा प्रेमी, दानी महानुभावों से जब अपील की तो सहज ही तीस के लगभग कमरों

के निर्माणार्थ राशि प्राप्त हो गई और सेठ गणपतराय लुहारीवाला ट्रस्ट ने एक विशाल हॉल कॉलेज हेतु निर्मित करवाया । प्रारम्भ में कॉलेज में केवल आर्ट्स [illegible] । [illegible] 1947 को ट्रस्ट की मीटिंग में [illegible] की शिक्षण की स्वीकृति के लिए आवेदन पत्र भेजा गया । और ही कॉलेज को स्नातक स्तर तक [illegible] विषयों को अतिरिक्त चार विषयों में [illegible] इन्टरमीडिएट तथा [illegible] नान मेडिकल विषयों के शिक्षण की भी स्वीकृति प्राप्त हो गई । विज्ञान के विषयों की प्रयोगशालाओं के लिए उपकरणों के खरीदने तथा कॉलेज के पुस्तकालय के लिए प्रचुर मात्रा में पुस्तकों की व्यवस्था करने में ट्रस्ट को काफी खर्चा वहन करना पड़ा । प्रयोगशालाओं के निर्माण में श्री गणपतराय लुहारीवाला ट्रस्ट व मोहूका परिवार ने भी काफी सहायता की ।

कॉलेज में नई नई वृहत् योजनाओं के क्रियान्वयन के कारण वार्षिक घाटा काफी रहने लगा । दूसरी और हाई स्कूल तथा प्राइमरी स्कूलों में भी काफी घाटा रहता था परन्तु श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी जो कि मिश्नरी भावना से कार्य कर रहे थे, यह घाटा उनके लिए कभी भी चिंता का विषय नहीं बना और इन सबकी श्रद्धा के केन्द्र ला. मेलाराम जी मोडा की अध्यक्षता में कॉलेज नई-नई ऊँचाइयों को स्पर्श करता ही रहा । इस ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी दानवीर सेठ किरोड़ीमल लुहारीवाला ने जो परोपकार एवं सेवा की प्रतिमूर्ति थे, कॉलेज की विशेष उन्नति के लिए रतनगढ़ स्थित, "सेठ किरोड़ीमल चैरिटेबिल ट्रस्ट" के अन्तर्गत वैश्य कॉलेज के संचालन की सन् 1949 में इच्छा व्यक्त की । सेठ जी ने श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के सभी ट्रस्टियों को आश्वस्त भी किया कि कॉलेज का नाम वैश्य कॉलेज ही रहेगा और कॉलेज की प्रबंध व्यवस्था में श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट [illegible] का प्रतिनिधित्व होगा । सेठ जी की शिक्षा के [illegible] उत्कृष्ट भावनाओं का सम्मान करते हुए और [illegible] के सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत, श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट ने दिनांक 19.2.51 को विधिवत कॉलेज [illegible] संचालन का उत्तरदायित्व सेठ किरोड़ीमल [illegible] "चैरिटेबिल ट्रस्ट" को सौंप दिया । [illegible] की 1951 में प्रधान सेठ किरोड़ीमल जी और [illegible] रामकुमार जी मोडा बने । श्री रामकुमार [illegible] श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट द्वारा कॉलेज के [illegible] काल में भी कॉलेज के मन्त्री थे । श्री रामकुमार [illegible] मोडा के पश्चात सेठ जी ने भिवानी के प्रतिष्ठित [illegible] ठाकुर चिरंजीत सिंह को कॉलेज का मन्त्री [illegible] किया और वह लम्बी अवधि तक इस पद को सुशोभित करते रहे । उनके कार्यकाल में कॉलेज ने काफी [illegible] की ।

सेठ किरोड़ीमल ट्रस्ट ने लगभग चौबीस [illegible] कॉलेज का संचालन किया । वैसे सन् 1944 से [illegible] तक जब कॉलेज श्री वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अ[illegible] था, तब भी सेठ किरोड़ीमल चैरिटेबिल ट्रस्ट ने [illegible] ओर से काफी कमरों का निर्माण करवाया था । कॉलेज इनके ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित हुआ तब भी कमरों का निर्माण इनके ट्रस्ट ने करवाया । [illegible] प्रकार 30 के लगभग कमरों का निर्माण इस ट्रस्ट [illegible] किया जाना, कॉलेज के प्रति सेठ जी के [illegible] का परिचायक है । इन्हीं दिनों इनके ट्रस्ट की [illegible] से एक गैस्ट हाऊस का निर्माण भी कॉलेज की [illegible] में करवाया गया । कालेज पुस्तकालय में [illegible] पुस्तकें नई खरीदकर इसे हरियाणा के [illegible] पुस्तकालय के रूप में विकसित किया गया । [illegible] संकाय का इन्टरमीडियेट स्तर उन्नत होकर [illegible] स्तर आरम्भ हुआ । चार विषयों में तो [illegible]

Principal, VAISH COLLEGE BHIWANI

कॉलेज में राष्ट्रीय कैडेट कोर का [illegible] वर्षों से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है । इस महाविद्यालय की भूमि से [illegible] अनेक कैडेट आज सेना में उच्च पदों पर विराजमान हैं । ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो आज सेना, जनरल, ब्रिगेडियर व कर्नल जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं तथा कर रहे हैं । सेना में ही नहीं अपितु आई. पी. एस. में भी आने का सौभाग्य अनेक कैडेटों को प्राप्त हो चुका है ।

कॉलेज के प्रारम्भ से ही कॉलेज में विभिन्न अन्तरंग तथा बहिरंग सभी खेलों की सुन्दर व्यवस्था है । कॉलेज के छात्र एवं छात्राएँ न केवल विभिन्न खेलों में अपने विश्वविद्यालय स्तर पर ही उल्लेखनीय स्थान प्राप्त कर अनेक ट्राफी व स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक प्राप्त करते हैं अपितु अन्तर्विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिताओं में भी विशेष स्थान प्राप्त करते हैं ।

अब कॉलेज में हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, टेबल टेनिस लॉन टेनिस, चैस, योग, बॉक्सिंग, कुश्ती, एथलेटिक्स, बैडमिन्टन, कबड्डी, हैण्डबॉल, बास्केटबॉल, वेटलिफ्टिंग, जिम्ना[illegible] आदि सभी खेलों की व्यवस्था है । अन्तर्वि[illegible] विभिन्न खेलों में समय-समय पर इस कॉ[illegible] विद्यार्थियों का चैम्पियन रहना, कॉलेज के प्रब[illegible] खेलों को प्राथमिकता दिये जाने का प्रत्यक्ष प्र[illegible]

कॉलेज के पूर्व छात्रों में से एक सां[illegible] (वीरेन्द्रसिंह भूतपूर्व कृषि मन्त्री हरियाणा) 405 [illegible] एवं न्यायाधीश, दो आई.एफ. एस. 25 आई.ए[illegible] आई.पी.एस. दो ब्रिगेडियर 5 कर्नल, 45 कै[illegible] मेजर, 73 लैफ्टिनेन्ट, 1 मेराइन इन्जीनि[illegible] इन्जीनियर और 90 डॉक्टर हैं । अन्य बहुत से [illegible] शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, तथा प्रशासन आदि [illegible] उच्च पदों पर नियुक्त हैं । संस्था को ऐसे अ[illegible] लब्ध प्रतिष्ठित पूर्व विद्यार्थियों पर गर्व है ।

कॉलेज के सौभाग्य से इसे समय-समय [illegible] प्राचार्यों तथा प्राध्यापकों की सेवाएँ प्राप्त होती [illegible] वर्तमान प्राध्यापकों में भी 11 प्राध्यापक पी.एच.[illegible] प्राप्त हैं । 2 अंग्रेजी विभाग में, 3 मनोविज्ञान [illegible] में, 3 हिन्दी विभाग में और, 3 जीवविज्ञान वि[illegible]

सन्	विद्यार्थी का नाम	कक्षा एवं विभाग, विषय–विश्वविद्यालय
1951	सर्व श्री वेद प्रकाश गुप्ता	बी.ए. ऑनर्स (दर्शन शास्त्र)
1957	" ओम प्रकाश	बी.ए. ऑनर्स (अंग्रेजी)
1972	" आनंद प्रकाश	बी.एस.सी., टी.डी.सी. (III)
1972	" रवीन्द्र कुमार जैन	बी.एस.सी. टी.डी.सी. (III)
1978	" जलद माथुर	एम.ए. उत्तरार्द्ध हिन्दी,
1978	" राजकुमार	बी.काम. टी.डी.सी. (III)
1979	" नरेन्द्र गोयल	प्री युनिवर्सिटी (नानमैडिकल)
1980	" अंजनी अग्रवाल	बी.काम. (पार्ट–प्रथम)
1984	" राजेश कुमार	बी.काम. (पार्ट–प्रथम)
1986	" कविता मिश्रा	एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी,
1986	" सुधारानी	एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी,
1986	" धर्मेन्द्र शर्मा	एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी,

VAISH COLLEGE, BHIWANI

LIST OF ADMISSION FOR THE YEAR/ SESSION : 2019-2020 13-12-19

Dated :- 04.07.2019 to ~~22.10.2019~~

Sr. No.	Class	SC/ST		Total	BC-A		Total	BC-B		Total	EBC		Total	General		Total	Grand Total		Grand
		Boys	Girls	SC/ST	Boys	Girls	BC	Boys	Girls	SBC	Boys	Girls	EBC	Boys	Girls	Gener	Boys	Girls	Total
1	B.Sc.I (Med.)	1	3	4	5	3	8		2	2			0	12	16	28	18	24	42
	B.Sc.I (CS)	3		3	4		4			0			0	27		27	34	0	34
	B.Sc.I (NM)	3		3	21	1	22	11		11			0	95	10	105	130	11	141
2	B.Sc.II (Med.)	2	1	3	6	3	9	1	2	3			0	12	14	26	21	20	41
	B.Sc.II (CS)			0	2		2	1		1			0	14	2	16	17	2	19
	B.Sc.II (NM)	3		3	18	5	23	10	1	11			0	111	11	122	142	17	159
3	B.Sc.III (Med.)	5	2	7	2		2		2	2			0	6	11	17	13	15	28
	B.Sc.III (CS)	4		4	2		2	1		1			0	10		10	17	0	17
	B.Sc.III (NM)	7	4	11	21	3	24	6	2	8			0	69	5	74	103	14	117
4	B.Com.I (Gen.)	3	2	5	7		7	1	1	2			0	60	14	74	71	17	88
	B.Com.I (ASM)	1		1	5	1	6			0			0	16	1	17	22	2	24
	B.Com.I (CA)			0			0			0			0			0	0	0	0
5	B.Com.II (Gen)	5	2	7	8		8	3	2	5			0	45	10	55	61	14	75
	B.Com.II (C.A.)	1		1		1	1			0			0	1	2	3	2	3	5
	B.Com.II (ASM)			0	2		2			0			0	6	1	7	8	1	9
6	B.Com.III(Gen)	3	1	4	11	3	14	5	1	6			0	27	9	36	46	14	60
	B.Com.III (C.A.)		1	1			0			0			0	4	1	5	4	2	6
	B.Com.III (ASM)	1		1	2	1	3			0			0	6		6	9	1	10
7	B.A.I	101	6	107	84	5	89	51	3	54			0	345	41	386	581	55	636
8	B.A.II	69	6	75	73	9	82	47	7	54			0	231	34	265	420	56	476
9	B.A.III	49	12	61	25	5	30	16	3	19			0	168	35	203	258	55	313
10	M.A.(P) Hindi	5	11	16	1	3	4	4	3	7			0	8	24	32	18	41	59
11	M.A.(F) Hindi	1	6	7		5	5	1	1	2			0	6	25	31	8	37	45
GRAND TOTAL :-		267	57	324	299	48	347	158	30	188	0	0	0	1279	266	1545	2003	401	2404

Grand Total :- 2404

PRINCIPAL

PRINCIPAL,
Vaish College,
BHIWANI

PRINCIPAL

Department of Management and Computer Sciences

Vaish college, Bhiwani

Total Admission List 2019-20

CLASS	Sem /Year	GEN			SC			BC			Total		Total
		Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	
BBA	1	12	0	12	0	0	0	2	1	3	14	1	15
BBA	2	10	2	12	0	0	0	1	0	1	11	2	13
BBA	3	14	1	15	0	0	0	0	1	1	14	2	16
BCA	1	15	1	16	2	0	2	3	0	3	20	1	21
BCA	2	18	0	18	1	0	1	5	0	5	24	0	24
BCA	3	22	0	22	1	0	1	3	0	3	26	0	26
B.COM	1	41	4	45	1	2	3	3	2	5	45	8	53
B.COM	2	28	3	31	0	0	0	1	0	1	29	3	32
B.COM	3	54	3	57	0	0	0	6	2	8	60	5	65
M.Sc. Maths	1	16	31	47	0	2	2	4	9	13	20	42	62
M.Sc. Maths	2	10	34	44	0	3	3	1	7	8	11	44	55
M.Com	1	0	27	27	1	1	2	1	5	6	2	33	35
M.Com	2	5	13	18	2	0	2	0	4	4	7	17	24
M.Sc. (CS)	1	7	5	12	0	1	1	1	1	2	8	7	15
M.Sc. (CS)	2	2	1	3	0	0	0	1	0	1	3	1	4
APGDCA	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
TOTAL		254	125	379	8	9	17	32	32	64	294	166	460

PRINCIPAL,
Vaish College
BHIWANI

Bronze medalist in Olympics games 2008

1825

Sr. No. ....

VAISH P.G. COLLEGE, BHIWANI Session 2003-2004

Class B A P A R T I Roll No. Uni. Regd. No 2648

Name V I J E N D E R

Father's Name M A H I P A L

Mother's Name K R I S H N A

Address Vill K A L U W A S P.O. P A L W A S Distt & Teh B H I W A N I

Date of Birth 29 10 1985

Date of admission 30 06 03 Date of withdrawal

Whether SC/BC/ST/OBC class :- (Y/N) N Caste/Tribe H I N D U J A T

College Roll No. of Last Year ....

Subjects offered : 1. English 2 Hindi 3 POL 4 HIS 5 .... 6 ....

Record of last university examination taken or detenation (with reasons)

Examination	Year	Roll No.	School/College	Uni.Div.	Marks	Percentage
Matric	2001	312133	G. High School Palwas	Second	271	45%
10+2	2003	316982	G. S. S. School Chang	Second	288	57.6%
BA/BSc./Bcom.I						
BA/BSc./Bcom II						
BA/BSc./Bcom III						
M.A. - I/II						

Checked & found correct

For Office use Only

University Examination Result

Signature

April	April/Sept. ....
Uni. Roll No.	Uni. Roll No. 305201
Marks obtained	Marks obtained
Eng	1. Eng – 46
....	2. Hin – 35
....	3. Hist – 51
....	4. Pol.Sc – 40
....	5. ....
....	6. ....
Total	Total 172/400

Passed/Failed/ Re-appear

Received detailed marks card.

Signature of the candidate

Principal, VAISH COLLEGE BHIWANI

Vaish College, Bhiwani
Dated :- 26.10.2019